दीपावली विशेष



एक दीपावली, अनेक परंपराएं

कहीं राम की वापसी का उत्सव, कहीं मां काली की आराधना, तो कहीं पूर्वजों और महापुरुषों की स्मृति से जुड़ा है रोशनी का पर्व....

भारत में दीपावली का नाम आते ही मिट्टी के दीये, रंगोली, मिठाइयां और जगमगाते बाजारों की तस्वीर उभरती है। लेकिन देश के अलग-अलग हिस्सों में इस पर्व के अर्थ, मान्यताएं और उत्सव मनाने के तरीके इतने विविध हैं कि हर क्षेत्र की अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान दिखाई देती है। कहीं दीपावली भगवान राम की अयोध्या वापसी की स्मृति है, कहीं भगवान कृष्ण की नरकासुर पर विजय का उत्सव, कहीं मां काली की आराधना का अवसर, तो कहीं भगवान महावीर के निर्वाण और गुरु हरगोबिंद साहिब की मुक्ति की याद से जुड़ा पर्व। महाराष्ट्र में राजा बलि से संबंधित परंपराएं, गुजरात में नववर्ष का स्वागत और ओडिशा में पूर्वजों का स्मरण भी इस व्यापक सांस्कृतिक संसार का हिस्सा हैं।

दीपावली को किसी एक धार्मिक कथा, एक पूजा या एक दिन तक सीमित करके नहीं देखा जा सकता। यह भारत की विविध परंपराओं, लोकविश्वासों, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक जीवन का ऐसा उत्सव है, जिसमें अलग-अलग समुदाय अपनी विशिष्ट मान्यताओं के साथ शामिल होते हैं। इसकी कोई सर्वमान्य आधिकारिक गणना नहीं है कि देश में दीपावली कितने प्रकार से मनाई जाती है। अलग-अलग राज्यों में प्रचलित प्रमुख परंपराओं को देखें तो इसके अनेक रंग सामने आते हैं।



उत्तर भारत में राम की वापसी का उत्सव

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर भारत के अनेक हिस्सों में दीपावली का सबसे प्रचलित धार्मिक संदर्भ भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण की चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या वापसी है। लोकमान्यता के अनुसार, अयोध्यावासियों ने अपने प्रिय राजा के लौटने की खुशी में दीप जलाकर उनका स्वागत किया था। यही प्रसंग दीपावली पर घरों और मंदिरों में दीप प्रज्वलित करने की परंपरा से जुड़ा हुआ है।

इस दिन घरों की सफाई, दीप सज्जा, रंगोली, लक्ष्मी-गणेश पूजन, मिठाइयों का आदान-प्रदान और रिश्तेदारों से मिलना उत्सव के प्रमुख अंग हैं। अयोध्या में दीपोत्सव के माध्यम से इस परंपरा को भव्य सार्वजनिक आयोजन का स्वरूप मिला है। मध्य प्रदेश में भी दीपावली धार्मिक आस्था के साथ पारिवारिक मिलन और सामाजिक उल्लास का अवसर होती है। यहां दीपावली के बाद गोवर्धन पूजा, अन्नकूट और भाईदूज की परंपराएं भी अनेक स्थानों पर उत्साह से निभाई जाती हैं।



काशी की देव दीपावली, रोशनी का एक अलग उत्सव



वाराणसी की देव दीपावली को मुख्य दीपावली से अलग समझना जरूरी है। यह कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मनाई जाती है, जबकि मुख्य दीपावली कार्तिक अमावस्या से संबंधित है। इस दिन गंगा के घाटों पर बड़ी संख्या में दीप जलाए जाते हैं। मंदिरों, घाटों और आसपास के क्षेत्रों में धार्मिक अनुष्ठान होते हैं और पूरा नगर रोशनी से जगमगा उठता है।

लोकमान्यता में देव दीपावली को देवताओं की दीपावली कहा जाता है। यह पर्व कार्तिक मास की धार्मिक परंपराओं और गंगा के प्रति श्रद्धा से जुड़ा है। मुख्य दीपावली के लगभग पंद्रह दिन बाद मनाया जाने वाला यह उत्सव काशी की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

पश्चिम बंगाल

अमावस्या की रात मां काली की पूजा का विशेष महत्व



पश्चिम बंगाल में दीपावली की अमावस्या की रात मां काली की पूजा का विशेष महत्व है। कोलकाता सहित राज्य के अनेक हिस्सों में काली पूजा के लिए भव्य पंडाल सजाए जाते हैं और मां की प्रतिमाओं की स्थापना की जाती है। रात में विशेष पूजा-अर्चना होती है और भक्त शक्ति की आराधना करते हैं।

उत्तर भारत में दीपावली की पहचान मुख्य रूप से लक्ष्मी-गणेश पूजन से होती है, जबकि पश्चिम बंगाल में इसी रात मां काली की उपासना प्रमुख आकर्षण बन जाती है। यह अंतर भारतीय संस्कृति की विविधता को स्पष्ट करता है। ओडिशा के कई हिस्सों में भी दीपावली के समय काली पूजा की जाती है। इस प्रकार पूर्वी भारत में रोशनी के पर्व के साथ शक्ति उपासना की परंपरा गहराई से जुड़ी हुई है।

गुजरात

लक्ष्मी पूजन और नए वर्ष का स्वागत....



गुजरात में दीपावली का धार्मिक महत्व व्यापारिक और सामाजिक जीवन से भी जुड़ा हुआ है। व्यापारी प्रतिष्ठानों में लक्ष्मी पूजन किया जाता है और नई बहीखातों की परंपरा को शुभ शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। दीपावली के बाद गुजराती नववर्ष का स्वागत किया जाता है, जिसे बेस्टु वर्ष कहा जाता है। घर के प्रवेश द्वार पर रंगोली बनाना, दीप जलाना, शुभता के प्रतीक चिह्न सजाना और परिवार तथा मित्रों को नववर्ष की शुभकामनाएं देना इस उत्सव का हिस्सा है। गुजरात में दीपावली केवल बीते वर्ष की विदाई नहीं, बल्कि नए संकल्पों, व्यापारिक शुरुआत और समृद्धि की कामना का भी अवसर है। हालांकि दीपावली और गुजराती नववर्ष अलग-अलग तिथियों से संबंधित हैं, लेकिन दोनों के बीच सांस्कृतिक जुड़ाव बहुत गहरा है।

राजस्थान

रोशनी, बाजार और पारिवारिक उल्लास...



राजस्थान में दीपावली के अवसर पर जयपुर, उदयपुर और अन्य शहरों के बाजारों तथा प्रमुख इमारतों को आकर्षक ढंग से सजाया जाता है। घरों में लक्ष्मी-गणेश पूजन, दीप प्रज्वलन, रंगोली और मिठाइयों का आदान-प्रदान उत्सव का प्रमुख हिस्सा है। व्यापारिक प्रतिष्ठानों में नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत से जुड़ी मान्यताओं और बहीखातों के पूजन की परंपरा भी दिखाई देती है। राजस्थान की दीपावली को किसी एक अलग धार्मिक कथा से परिभाषित करना उचित नहीं होगा। यहां स्थानीय लोकाचार, पारिवारिक परंपराएं, बाजारों की सजावट और पारंपरिक खानपान मिलकर उत्सव का स्वरूप बनाते हैं। पुराने शहरों की हवेलियों, मंदिरों और बाजारों में दीपों की रोशनी पर्व को विशिष्ट दृश्यात्मक पहचान देती है।

अनेक परंपराएं, लेकिन संदेश एक

भारत में दीपावली के इन विविध रूपों को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पर्व किसी एक कथा या पूजा तक सीमित नहीं है। कहीं राम की वापसी, कहीं कृष्ण की विजय, कहीं मां काली की आराधना, कहीं महावीर के निर्वाण और कहीं गुरु हरगोबिंद साहिब की मुक्ति की स्मृति इसे विशेष अर्थ प्रदान करती है। कुछ क्षेत्रों में पूर्वजों का स्मरण प्रमुख है, तो कुछ में नए वर्ष का स्वागत और पारिवारिक संबंधों का उत्सव महत्वपूर्ण है।

इन सभी परंपराओं के बीच प्रकाश, शुभता, आशा और नए आरंभ की भावना एक साझा सूत्र के रूप में दिखाई देती है। दीपावली लोगों को परिवार और समाज के साथ जुड़ने, पुरानी कटुता भुलाने, संबंधों को मजबूत करने और भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टि रखने का अवसर देती है।

भारत की सांस्कृतिक शक्ति इसी विविधता में निहित है। यहां एक ही पर्व अनेक रूपों में मनाया जा सकता है और हर रूप अपनी अलग मान्यता तथा परंपरा के साथ जीवित रह सकता है। दीपावली का वास्तविक सौंदर्य भी इसी में है कि अलग-अलग आस्थाओं और रीति-रिवाजों के बावजूद रोशनी का उत्सव लोगों को आशा, सद्भाव और मंगलकामना के साझा भाव से जोड़ता है।



सिख परंपरा में बंदी छोड़ दिवस...



सिख समुदाय में दीपावली के दिन बंदी छोड़ दिवस मनाया जाता है। यह छठे सिख गुरु, गुरु हरगोबिंद साहिब की ग्वालियर किले से रिहाई और उनके साथ 52 राजाओं की मुक्ति की स्मृति से जुड़ा है। सिख परंपरा के अनुसार, गुरु हरगोबिंद साहिब की रिहाई के बाद अमृतसर में प्रसन्नता व्यक्त की गई और दीप जलाए गए। इस अवसर पर गुरुद्वारों में विशेष कीर्तन, अरदास और धार्मिक आयोजन होते हैं। अमृतसर स्थित स्वर्ण मंदिर की प्रकाश सज्जा विशेष आकर्षण का केंद्र बनती है।

जैन परंपरा में भगवान महावीर का निर्वाण



जैन समुदाय के लिए दीपावली का विशेष आध्यात्मिक महत्व है। जैन परंपरा के अनुसार, चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने कार्तिक अमावस्या के दिन बिहार के पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया था। इसलिए जैन समाज में दीपावली को निर्वाण कल्याणक के रूप में भी मनाया जाता है। इस अवसर पर धार्मिक पाठ, पूजा, ध्यान और आध्यात्मिक चिंतन किया जाता है। जैन परंपरा में दीपों को ज्ञान के प्रकाश से भी जोड़ा जाता है।